सिटी भास्कर
30 जनवरी 2010

जोखिम उठाए युवा

युवावस्था में ही जोखिम उठाया जा सकता है। यह उम्र निश्चित समय के लिए होती है। एजुकेशन सिस्टम में परफेक्ट स्किल्स की काफी कमी है। शिक्षा को पूरी तरह इंडस्ट्री की जरूरत के मुताबिक तो नहीं बनाया जा सकता परंतु इसमें बड़े सुधार की जरूरत है। दुनिया में सभी बड़े बदलाव युवा लेकर आए। बात चाहे स्वामी विवेकानंद की हो या सिकंदर की, इन सभी विभूतियों ने कम उम्र में बड़े-बड़े कामों को अंजाम दिया। विकास के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर और लेबर के साथ उद्यमशीलता जरूरी है।

प्रो. बिबेक देबरॉय
अनुसंधान योजना केंद्र नई दिल्ली

राजनीति में बोलबाला

युवाओं के बीच अब धर्म और जातिवाद की चर्चा खत्म हो चुकी है। अब यूथ वर्सेस ओल्ड की बात हो रही है। अगले 8 से 10 साल में राजनीति में युवाओं को बोलबाला होगा। युवा नेतृत्व को हर पार्टी लीडरशिप दे रही है। राजनैतिक पार्टियां भी मानने लगी है कि भारतीय राजनीति का भविष्य अब युवाओं के हाथों में है। राजनीति भी अन्य करियर की तरह ही अच्छा करियर साबित हो सकती है लेकिन इसे सीखा नहीं जा सकता यह जन्मजात गुणों के साथ आती है। उन्होंने कहा कि टी-20 में मेडिकल, टूरिज्म, साइंस एंड टेक्नोलॉजी और सर्विस सेक्टर में भारतीय को ढेरों अवसर मिलेंगे। अंग्रेजी भाषा पर भारतीय युवाओं की पकड़ उन्हें ग्लोबल मार्केट में सफलता दिलाएगी।

संजय निरूपम
लोकसभा सदस्य
उत्तरी मुंबई

कर्म ही प्रधान

अपने सपनों को पूरा करने के लिए युवाओं को विचारों की अभिव्यक्ति और कर्म को प्रधानता देते हुए उस पर पूरा विश्वास रखना चाहिए। नौजवान शब्द का तात्पर्य आयु से नहीं, अवस्था से है। कर्म, पुरुषार्थ और युवावस्था ही सफलता प्राप्ति के तीन आधार हैं।

आशुतोष राणा
फिल्म अभिनेता

अन्य वक्ता

आयोजन के अन्य सत्रों में आईआईएम बैंगलुरु के डॉ. जेपी साहू, एथिस्लेट टेलीकॉम के अचल सिंह, रिलायंस इंडस्ट्रीज के फरहान अंसारी, तकनीकी शिक्षा मध्यप्रदेश के संचालक आशीष डोंगरे और संचालक महिला एवं बाल कल्याण मप्र शासन गुलशन बामरा ने भी विचार रखे।

संगोष्ठी में उपस्थित प्रबुद्ध श्रोता।

आइपर सचिव आरके साधवानी श्री भावे के साथ।

वोकेशनल एजुकेशन मिले

कोलकाता के इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेन ट्रेड के हेड डॉ. के रंगराजन के अनुसार एजुकेशन सिस्टम और इंडस्ट्री के बीच सिंक्रोनाइजेशन की कमी है। युवा आबादी के लिए वोकेशनल इंस्टीट्यूट्स की काफी कमी है। भारत में लगभग 5000 आईटीआई और 7000 वोकेशनल स्कूल हैं, जबकि चीन में 5,00,000 सीनियर सेकेंडरी वोकेशनल स्कूल हैं। एजुकेशन सिस्टम में अंकों की दौड़ को खत्म किया जाना चाहिए।

लोकतंत्र की प्रक्रिया में हिस्सा

कन्फेडरेशन ऑफ एनजीओ के वालंटियर जेरोनिनियो अल्माइडा वेबसाइट के माध्यम से सोशल-पॉलिटिकल मुद्दों पर युवाओं में अवयरनेस ला रहे हैं। मानते हैं कि बीपीओ कल्चर ने उनकी क्रिएटिव और एनालिटिकल थिंकिंग को लगभग खत्म कर दिया है। बीपीओ में युवाओं के काम में सोच की भूमिका नही होती। लक्जरी की वजह से युवाओं में देश सेवा और समाज सेवा का जज्बा खत्म होता जा रहा है। राइट टू इंफॉर्मेशन, ब्लॉगिंग और इंटरनेट के जरिए आसपास की बुराइयों को दुनिया के सामने लाकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने में युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।